विन्येभद्रगण्यह् ॥ विभट्नमिवविन्तिरंम्रिकिमभद्रं एगाङ्गालभ द्यां अववरा इसंभित्वाः एउतिम्बेदियः वहार्योद्धभयभिष्ठ अन्वं भुग्द क्मित्रिं निष्टन यण्याने येणुलधां वर्ते भद्र उत्पर्शा न्यविधिः॥ गंडरग्रहिं अन्द्र्णथभन्भाकार्या निर्माने उत्म इतिष्ठ्यभद्रनाभ्य ॥ गण्यहार्ड्यो धस्त्रभव्या थविभज्ञ अवेसर विनम्यदिश्च कि मिर्णप्य मनश्चर्यभ्य प्रम्परियमित य मार्कोभन्थनः सभस्पन्यक्षः ॥ गायकः। वि विवर नारिष्ठहवः भः ॥ उक्त भाषिक भयति ॥ भविडः। की क्रमः। एगि हर्मन स्का भड़ाकविमित्र भड़में भूलः।रिणवाः भड़ाद भन्नः।कि क्लिपिनिक्लीय। दंभड्रेथे दंभः। भचगउरुद्व या विचुडा भन्डा। भविड उक्वविच भक्षन द्वाभनिवा गाउँ। भविड भविष विविच हिन्स्य लेगेरीरि भविद्सकः उद्यभवितः।। बन्धः। वान वालानि। बाला भाषवाद्यानेकित्राः व्यक्षा ब्रह्मा भाष्ट्री।

हने भीवा । की भाग । हव हम दग्ला गर का । इसा हव हय गदल दरलगाउग्रान्तिः। ध्यानं हलनगा । महं वसगं यसि प्रे मवः। इस ह्याकारं महत्यरयि । म्यस्कान्य । ज्याभन्य न्य ध्या ध्या ।।। भंगीभिताष्ट्रयाभदे विधानाया। भरोडियाडे ।। विया । अकुराया। वि म्युत्रस्थम्मित्रद्धायक्या। भग भन्ती भन्भावीयगीक्या वारा ः । यः। इक्तिक्षुक्रुधः। भक्लवमम् मुल्यक्रुगा नः।मभानी हज्रुक्षिश्द्रमुप्पन ॥ध्यम्या ।श्रक्षक्षेत्रया ॥ निक्र हवः सः उद्भविषः। शही वियंन्य येन्य प्रीति गायवी।। यस मित्रिक् की डी वि गण्यरी। गत्विया में यर डेर गण्यरी। इंडिंभम् मंत्र गायरी।इक्रल्यान इक्रान्ध्यान महत्त्वमैः धेरियादिनः। दशया न भवमित्रभा । भएए । प्रमिश्विमस्काः। यहार उपारि मभूलया मंदिनस्कारः। १ ।। ।। मस्याराध्याभिविधः।। यहि वहित्रभक्त नक्षण्यस्य मुक्तिरेगभद्रन्ययः दिभिभभ्रहेभ

भहारि विभयलं गयरी मिरम्भद रिश्वर यउ प्राधि प्राधि प्राधि स्थान स्

गम्भाक्त्रवः भविउपमञ्चाम् गम्भान्य । प्रतिभाववभ्व स्थान्य स्थान्य । प्रतिभाववभव स्थान्य स्थान्य । प्रतिभाववभव स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य । प्रतिभाववभव स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

STORY TO STATE THE WARRENT WARRENT TO WE WARRENT TO THE WARRENT THE W हिर्देश मार्थित कार्ष कार्य वार्थित कार्य कार कार्य का भक्रणकुराष्ट्र विभित्र क्षेत्र विकार क्षेत्र कुरम्भिनभर्षम्भाषं कुरार्थिकरातिकाम् विवायिक्षित्रम् राष्ट्राण्डाकरान्त्रम् निस्रोक्षिकः कार्या मानिक वासे होता में ता के के प्रति के प्रमाण के प्राप्ति के प्रति के ngkilindig eterrepeans operentation of general stelles to be seen the see